Toppersnotes®
Unleash the topper in you

Rajasthan – CET

स्नातक स्तर

सामान्य पात्रता परीक्षा (CET)

भाग - 1

राजस्थान का इतिहास, कला एवं संस्कृति

SIERRA INNOVATIONS

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
1	राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग	1
2	मेवाड़ का इतिहास	10
3	राठौड़ राजवंश और मारवाड़ का इतिहास	25
4	चौहानों का इतिहास	36
5	आमेर का इतिहास (कच्छवाहा वंश)	45
6	जैसलमेर का भाटी वंश	55
7	करौली–भरतपुर का इतिहास	57
8	राजस्थान की प्रशासन और राजस्व व्यवस्था	60
9	राजस्थान और 1857 का विद्रोह	64
10	राजस्थान में किसान आंदोलन	71
11	राजस्थान में जनजातीय आंदोलन	79
12	राजस्थान में राजनीतिक जागृति	83
13	प्रजामंडल आंदोलन	90
14	राजस्थान का राजनीतिक एकीकरण	100
15	राजस्थान स्थापत्य एवं शिल्प कला	107
16	राजस्थान की चित्रकला	123
17	राजस्थान की हस्तशिल्प कला	131
18	राजस्थान के लोकगीत और वाद्य यंत्र	136
19	राजस्थान के लोक नृत्य	146
20	राजस्थान के लोक नाट्य	150
21	राजस्थान के मेले और त्योहार	153
22	राजस्थान के संत और लोक देवी – देवता	163
23	राजस्थानी भाषा एवं बोलियाँ	176

विषयसूची

S No.	Chapter Title	Page No.
24	राजस्थान का साहित्य	179

1
CHAPTER

राजस्थान का प्राक् एवं आद्य ऐतिहासिक युग

मानव इतिहास को तीन कालों में विभाजित किया जाता है –

1. प्राक् युग (प्रागैतिहासिक युग)
2. आद्य युग
3. एतिहासिक युग

प्राक् युग (प्रागैतिहासिक युग)

प्राक् युग वह काल है जब मानव ने लेखनकला का आविष्कार नहीं किया था, और इस काल के बारे में जानकारी लिखित साक्ष्यों के बजाय भौतिक अवशेषों, जैसे उपकरणों, गुफा चित्रों, कंकालों, और अन्य पुरातात्विक साक्ष्यों से मिलती है। यह मानव इतिहास का सबसे प्राचीन काल है, जिसमें मानव ने धीरे-धीरे अपनी जीवनशैली विकसित की।

प्राक् युग के कालखंड

1. पाषाण युग:

- इस काल में मानव पत्थर के उपकरणों का उपयोग करता था।
- इसे तीन उप-कालों में विभाजित किया गया है:
  - ✓ पुरापाषाण युग: मानव शिकारी और संग्रहकर्ता था।
  - ✓ मध्यपाषाण युग/लघु-पाषाण काल: खेती और पशुपालन की शुरुआत हुई।
  - ✓ नवपाषाण युग: स्थायी बस्तियों और कृषि का विकास हुआ।

2. ताम्र युग :

- इस काल में मानव ने तांबे के उपकरणों और हथियारों का उपयोग करना शुरू किया था।

3. कांस्य युग :

- तांबे और टिन के मिश्रण से कांसे का उपयोग।
- हड़प्पा सभ्यता इसी काल का उदाहरण है।

पुरापाषाण युग

राजस्थान में पुरापाषाण युग (500000 ईसा पूर्व-10000 ईसा पूर्व)

- इस काल में मानव पत्थर के औजारों का प्रयोग करता था और उसे धातु गलाने और उपकरण बनाने की कला का ज्ञान नहीं था।
- इस काल के महत्त्वपूर्ण उत्खननकर्ता –
  - ✓ वीरेन्द्रनाथ मिश्र
  - ✓ आर.सी. अग्रवाल
  - ✓ डॉ. विजय कुमार
  - ✓ हरिश्चंद्र मिश्रा
- पुरापाषाण युग 3 उपयुगों में विभाजित किया जाता है -

निम्न पुरापाषाण युग (5,00,000 ईसा पूर्व - 50,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान से सम्बंधित इस युग के स्थल मुख्य रूप से अरावली के पूर्व में स्थित है।
- 1870 में सी.ए. हैकेट ने सर्वप्रथम जयपुर और इन्द्रगढ से पत्थर के बने पाषाणकालीन हस्त कुठार की खोज की थी।
- सेटनकार ने झालावाड़ से पाषाणकालीन और बी. आल्चिन ने जालौर से पूर्व पाषाणकालीन उपकरणों की खोज की।
- राजस्थान के निम्न पुरापाषाण स्थल - मंडपिया, बींगोद, देवली, नाथद्वारा, भैंसरोड़गढ़ और नावघाट।
- भीलवाडा में बनास नदी के किनारे स्थित मंडपिया की खोज वी. एन. मिश्रा ने की थी।

मध्य पुरापाषाण (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- राजस्थान में मध्य पुरापाषाण स्थल – अरावली के पश्चिम में लूनी घाटी, पाली और जोधपुर, मोगरा, नागरी, बारिधानी, समदड़ी, धुंधाड़ा , श्रीकृष्णपुरा, हुंडगाँव, पिचाक आदि।
- मध्य पुराषाणकाल के उपकरण चित्तौड़गढ़ जिले के बनास-बेड़च नदी तंत्र की वागन और कन्दमाली नदी घाटियों तथा कोटा में चंबल नदी घाटी में पाए गए हैं।

उच्च पुरापाषाण काल (20,000 ईसा पूर्व - 10,000 ईसा पूर्व)

- मानव द्वारा कला का सबसे प्रारंभिक रूप शैलचित्र (भीमबेटका) के रूप में उत्तर पुरापाषाण काल का है।
- राज्य के जयपुर, अलवर, कोटा, झालावाड़, भरतपुर तथा चितौड़गढ़ क्षेत्रों से प्रचुर मात्रा में शैल चित्र प्राप्त हुए है।

- विराटनगर (जयपुर) में शैलचित्रों की बहुलता के कारण पुरातत्व वेताओं ने इसे प्राचीन युग की चित्रशाला भी कहा है।
- विराटनगर से प्राकृतिक गुफाएं तथा शैलाश्रय की खोज हुई तथा भरतपुर जिले के 'दर' नामक स्थान से कुछ शिलाकुटीरों में व्याघ्र, बारहसिंघा व मानव आकृतियाँ चित्रित है जो प्रारम्भिक पाषाण-कालीन मानव के चित्रकला से परिचय का प्रमाण है।
- राजस्थान में उच्च पुरापाषाण स्थल - उत्तर पाषाणकालीन औजार एवं अवशेष मुख्यतः बुढा पुष्कर, चम्बल, भैसरोड़गढ़, नवाघाट, बनास नदी के तट पर हमीरगढ़, जहाजपुर, देवली व गिलुण्ड, लूनी नदी के तट पर पाली, समदड़ी, शिकारपुर, सोजत, पीपाड़, खींवसर, बनास नदी के तट पर टोंक में भरनी आदि अनेक स्थानों से प्राप्त हुए हैं।

राजस्थान में मध्यपाषाण(लघु-पाषाण काल) युग (50,000 ईसा पूर्व - 20,000 ईसा पूर्व)

- बागोर- मध्यपाषाणकालीन स्थल बागोर, भीलवाड़ा के निकट कोठारी नदी के किनारे एक बड़े रेत के टीले के रूप में स्थित है जिसे महासतियों का टीला कहा जाता है। प्रथम उत्खनन 1967 में वी. एन. मिश्रा और डॉ. एल. एस. लेश्निक द्वारा किया गया तथा यहाँ से तांबे के उपकरणों में छेद वाली सुई और पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिले हैं। उद्योग की दृष्टि से यह भारत का सबसे समृद्ध लघुपाषाणिक स्थल है।
- राजस्थान में विशेष रूप से 2 क्षेत्रों से मध्य पाषाणकालीन स्थल खोजे गए हैं -
  - ✓ दक्षिण-पूर्वी राजस्थान (मेवाड़)
  - ✓ पश्चिमी राजस्थान में लूनी नदी का निम्न बेसिन
- मुख्य स्थान -
  - ✓ बागोर (भीलवाड़ा), तिलवाड़ा (बाड़मेर), विराटनगर (जयपुर), सोजत (पाली), धनैरी (आसींद, भीलवाड़ा), निम्बाहेड़ा, मंडपिया
- इसके अतिरिक्त चित्तौड़ की बेड़च नदी और विराटनगर से मध्य पाषाणकालीन उपकरण मिले है।
  - ✓ इन छोटे पाषाण उपकरणों को माइक्रोलिथ कहा गया है।
  - ✓ स्क्रेपर
  - ✓ पॉइंट

राजस्थान में नवपाषाण काल

- अजमेर, नागौर, सीकर, झुंझुनू, जयपुर, उदयपुर, चित्तौड़, जोधपुर से नवपाषाणकालीन उपकरण प्राप्त हुए है जिसमे भीलवाडा के बागौर और बालोतरा के तिलवाड़ा स्थान महत्त्वपूर्ण है।
- राजस्थान में अवशेष - बनास नदी के तट पर हम्मीरगढ़, जहाजपुर (भीलवाड़ा), लूनी नदी के तट पर समदड़ी (बाड़मेर), तिलवाड़ा (बालोतरा) तथा भरणी (टोंक)।
- तिलवाड़ा से प्राप्त अवशेष :- पाँच आवास स्थल, चाक पर बने सलेटी व लाल रंग के मृदभांड, अग्निकुंड (मानव अस्थि भस्म और मृत पशुओं की अस्थियाँ- मानव की आखेटवृति) ।

ताम्रयुगीन सभ्यताए

आहड़ सभ्यता (उदयपुर)

- प्राचीन शिलालेखों में आहड़ का पुराना नाम “ताम्रवती” अंकित है।
- 10वीं और 11वीं शताब्दी में इसे “आघाटपुर/ आघाट दुर्ग” या “धूलकोट” या “ताम्रवती नगरी”, “ताम्बावली” कहा जाता था।
- यह आयड/ बेड़च नदी के तट पर स्थित है तथा बनास नदी क्षेत्र [बनास, बेड़च, गंभीरी और कोठारी] में होने के कारण इसे बनास सभ्यता भी कहा जाता है क्योंकि की इस नदी के प्रवाह क्षेत्र में आहड़ सभ्यता के कई स्थल मौजूद है जैसे गिलुण्ड, ओझियाना, बालाथल, पछमता, भगवानपुरा, रोजड़ी आदि ।
- अवधि – 1900 ईसा पूर्व से 1200 ईसा पूर्व तक अस्तित्व में ।
- प्रथम उत्खनन कार्य – 1953 में अक्षय कीर्ति व्यास के निर्देशन में।
- अन्य उत्खननकर्ता – 1956 में आर. सी. अग्रवाल (रत्नचन्द्र अग्रवाल) तथा उसके बाद 1961-62 में एच.डी.(हंसमुख धीरजलाल) सांकलिया जिसमें राजस्थान प्रशासन की ओर से श्री पी.एल. चक्रवती ने भाग लिया। 1961-62 में डेक्कन कॉलेज, पूना व मेलबर्न विश्वविद्यालय, ऑस्ट्रेलिया ने भी आहड़ का उत्खनन कार्य किया।
- आहड़ एक ग्रामीण सभ्यता थी। यहाँ के लोग ताँबा, लोहा, टिन व सोने से परिचित थे।

विशेषताएँ

- प्रमुख उद्योग - ताँबा गलाना और उसके उपकरण बनाना
  - ✓ ताम्बे की खदाने निकट ही स्थित है।
  - ✓ ताँबा (धातु) गलाने की एक भट्टी भी प्राप्त हुई है ।
- इस सभ्यता के लोग मकान बनाने के लिए धूप में सुखाई ईटो एवं पत्थरों का प्रयोग का प्रयोग करते थे।
- मृतकों को आभूषणों के साथ दफनाते थे।
- माप तोल के बाट प्राप्त– वाणिज्य के साक्ष्य
- लाल व काले मृद्भाण्ड का प्रयोग किया जाता था।
  - ✓ मृद्भाण्ड उल्टी तिपाई विधि से बनाये गए है।
- गोरे व कोठे - आहड़ सभ्यता में अनाज संग्रह के लिए उपयोग किए जाने वाले बड़े मृदभांड
  - ✓ प्रमुख खाद्यान्न - गेहूँ, ज्वार और चावल
- ताम्बे की 6 यूनानी मुद्राएं और 3 मुहरें प्राप्त हुई है, जिनमे एक मुद्रा पर एक ओर 1 त्रिशूल और दूसरी ओर यूनानी देवता अपोलो का चित्र अंकित है जिसके हाथों में तीर और तरकश है।
- "बनासियन बुल" – आहड़ से मिली टेराकोटा वृषभ आकृतियाँ।
- राजसमन्द के गिलुण्ड से आहड़ के समान ही धर्म संस्कृति मिली है, जिसे बनास संस्कृति भी कहा जाता है। यद्यपि आहड़ में पक्की ईटों का प्रयोग नही होता था जबकि गिलुण्ड में इनका बहुतायत में उपयोग होता था।

प्राप्त वस्तुएँ

मकानों की नींवो में पत्थरों का प्रयोग, कपड़े की छपाई हेतु लकडी के बने ठप्पे (रंगाई छपाई व्यवसाय के प्रमाण), ईरानी शैली के छोटे हत्थेदार बर्तन, हड्डी से निर्मित चाकू, लगभग 4000 वर्ष पुरानी (1900–1200 ईसा पूर्व) गेहूं, ज्वार और चावल जैसी कृषि फसलें, गोर-बनकोट (बड़े आकार के मृदभांड), एक मकान में एक पंक्ति में 7 चूल्हे (संयुक्त परिवार प्रणाली), टेराकोटा निर्मित 2 स्त्री धड़, लेपिस लाजुली (लाजवर्त) - बाह्य सम्पर्कों (ईरान) का संकेत, रसोई में दो या तीन मूँह वाले चूल्हे तथा बलुए पत्थर के सिलबट्टे प्राप्त हुए हैं।

महत्वपूर्ण स्थल

पछमता	➢ यह सभ्यता राजसमंद जिले में गिलूण्ड के पास स्थित है। ➢ पछमता मेवाड़ क्षेत्र की आहड़-बनास सभ्यता से संबंधित है जो कि हड़प्पा के समकालीन है।
	➢ यहाँ कई कलात्मक वस्तुएं जैसे नक्काशीयुक्त जार, सीप की चूड़ियां, टेराकोटा के मनके, शंख और जवाहरात जैसे लेपिस लेजूली (यह अर्द्ध कीमती पत्थर अफगानिस्तान के बदख्शां में पाया जाता है) मिले हैं।
गिलुण्ड सभ्यता	➢ राजसमंद जिले में बनास नदी के तट पर स्थित ग्रामीण संस्कृति । ➢ 1957-58 में प्रो.बी.बी. लाल ने गिलुण्ड पुरास्थल के 2 टीलों (स्थानीय रूप से मोडिया मगरी कहा जाता है) का उत्खनन किया। तत्पश्चात 1998 से 2003 ई. के मध्य दक्कन कॉलेज पूना के प्रो.वी.एस. शिन्दे एवं पेन्सिलवेनिया विश्वविद्यालय (अमेरिका) के प्रो. ग्रेगरी पोशल के निर्देशन में गिलुण्ड सभ्यता का उत्खनन किया गया। ➢ उत्खनन में विशाल भवनों (100×80), मिट्टी के खिलौनें, पत्थर की गोलियाँ एवं हाथी दांत की चूड़ियों के अवशेष मिले है। ➢ 5 प्रकार के मृद्भांड प्राप्त: ✓ सादे काले, पोलिशदार, भूरे, लाल और काले चित्रित
बालाथल	➢ उदयपुर की वल्लभनगर तहसील बेड़च नदी के किनारे में स्थित। ➢ खोजकर्ता - वी .एन. मिश्र (1993) ➢ यहाँ से 11 कमरों का विशाल दुर्गनुमा भवन के अवशेष (दुर्गीकरण के पुरावशेष) प्राप्त हुए हैं। ➢ यहाँ से 4000 वर्ष पुराना एक कंकाल मिला है जिसे “भारत में कुष्ठ रोग का सबसे प्राचीन प्रमाण” माना जाता है। ➢ अपरिष्कृत मृद्भाण्ड ✓ लोहा गलाने की भट्टियाँ भी प्राप्त हुई। ➢ योगी मुद्रा में शवाधान किया जाता था। ➢ लोग कृषि, आखेट तथा पशुपालन करते थे।

ओझियाना सभ्यता	➢ भीलवाड़ा के बदनोर के पास कोठारी नदी पर स्थित ताम्रपाषाणिक स्थल। ➢ सफेद बैल और गाय की मृण मूर्तियाँ प्राप्त। ➢ लाल काले मृदभांड की प्राप्ति ➢ उत्खनन - सर्वप्रथम उत्खनन 1998 में आर.सी. अग्रवाल के द्वारा किया गया। 2000 ई. में बी.आर. मीणा तथा आलोक त्रिपाठी ने ओझियाना का उत्खनन कार्य भारतीय पुरातत्व संरक्षण विभाग के निर्देशन में किया। जिनके सहयोगी बी.आर. सिंह तथा एस.सी. गुप्ता थे। ➢ यह नदी किनारे बसने वाली सभ्यताओं के विपरीत पहाड़ी पर स्थित सभ्यता स्थल है।

गणेश्वर - नीम का थाना (सीकर)

- सीकर में कान्तली नदी के किनारे स्थित है, जिसे "पुरातत्व का पुष्कर" भी कहा जाता है।
- यहाँ से ताम्रयुगीन संस्कृति का प्रचुर भंडार प्राप्त होने के कारण इसे "ताम्रयुगीन सभ्यताओं की जननी"/ताम्र संचयी संस्कृति कहा जाता है।
- उत्खनन - 1977 में आर. सी. अग्रवाल के नेतृत्व में और बाद में 1978-79 में विजय कुमार ने निर्देशन में उत्खनन कार्य किया गया।
- गणेश्वर 2800 ई.पू. की ताम्रयुगीन सभ्यता का प्रारम्भिक स्थल है व इस सभ्यता का नामकरण गणेश्वर टीले के नाम पर किया गया।
- वृहदाकार पत्थर के बाँध के साक्ष्य, मकान पत्थर के बनाए गए थे (ईंटो के उपयोग का कोई प्रमाण नही)।
- यहाँ से ताँबे का बाण और मछली पकड़ने का काँटा प्राप्त हुआ, तथा यहाँ से प्राप्त ताम्र उपकरणों में 99% तांबा है।
- गणेश्वर से तांबा हड़प्पा व मोहनजोदड़ो में निर्यात किया जाता था।
- दोहरी पेचदार शिरावाली ताम्रपिन भी यहाँ से प्राप्त हुई है। इसी प्रकार की पिन पश्चिमी एशिया में भी मिली है। सम्भवतः गणेश्वर से इन पिनों का निर्यात वहाँ किया जाता होगा।
- गणेश्वर के उत्खनन से प्राप्त सामग्री को' श्री राजकुमार हरदयाल राजकीय संग्रहालय' सीकर में रखा गया है।
- पुराविदों ने इस सभ्यता को पूर्व हड़प्पा कालीन ताम्रयुगीन सभ्यता कहा है। यह ताम्रयुगीन संस्कृतियों में सबसे प्राचीन सभ्यता है।
- यहाँ से प्राप्त मिट्टी के बर्तनों को "कृपषवर्णी मृदपात्र" कहते है, ये बर्तन काले व नीले रंग से सजाए हुए है।

लाछूरा सभ्यता

- भीलवाड़ा जिले की आसींद तहसील में स्थित है।
- उत्खनन- 1998-1999 में बी. आर. मीणा के निर्देशन में ।
- साक्ष्य
    - ✓ मानव तथा पशुओं की मृण्मूर्तियाँ
    - ✓ तांबे की चूड़ियाँ
    - ✓ मिट्टी की मुहरें (ब्राह्मी लिपि में 4 अक्षर अंकित) है।
    - ✓ ललितासन में नारी की मृण्मूर्ति

जोधपुरा सभ्यता

- कोटपूतली (जयपुर जिले में) - बहरोड़ में साबी (कृष्णावती) नदी के किनारे स्थित।
- जोधपुरा सभ्यता में "मानव आवास के चिन्ह फर्श व ईंटों की दीवार के रूप में मिलते है।
- यह लौहयुगीन (पीरियड-III) प्राचीन सभ्यता स्थल है जहाँ लौह धातु का निष्कर्षण करने वाली भट्टियाँ (उपलों का प्रयोग) भी खोजी गई।
- उत्खनन- 1972-75 में आर .सी. अग्रवाल और विजय कुमार द्वारा
- कपिशवर्णी मृद्पात्रों का भंडार प्राप्त
    - ✓ स्लेटी रंग की चित्रित मृद्भांड संस्कृति का महत्वपूर्ण स्थल
- मकान की छतो पर टाईल्स एवं छप्पर छाने का उपयोग।
- यहां से उत्खनन में गैरिक रंग के पानी पीने के पात्र, कटोरे, तश्तरियों के अवशेष, लोहे के शस्त्र तीरों के अग्रभाग, कीलें, शंख निर्मित चूड़ियों के टुकड़े कुबड़ौल की आकृतियाँ तथा मिट्टी व पत्थर के मनके भी प्राप्त हुए है।
- जोधपुरा से डिश ऑन स्टैंड भी प्राप्त हुआ है।

प्राक् हड़प्पा, विकसित व उत्तर हड़प्पा संस्कृति

कालीबंगा (हनुमानगढ) 2500 से ई. पू. 1500 ई. पू. तक

- प्राचीन दृषद्वती और सरस्वती नदी घाटी के बाएँ तट पर वर्तमान में घग्गर नदी के क्षेत्र में ।
- खोजकर्ता – अमलानन्द घोष (1952)।
- उत्खननकर्ता - 1961 से 1964 ई. के मध्य में बी. बी. लाल, बी. के. थापर, श्री एम,डी. खरे, के. एम. श्रीवास्तव, एस,पी. श्रीवास्तव द्वारा, भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण, नई दिल्ली के निर्देशन में
- उत्खननकर्ता चरण - 5
- कालीबंगा की खोज एक इतालवी इंडोलॉजिस्ट लुइगी पियो टेसीटोरी ने की थी।

- काली बंगा का शाब्दिक - अर्थ सिंधी भाषा में काले रंग की चूड़ियां ।
- स्थिति - राजस्थान के हनुमानगढ़ जिला मुख्यालय से दक्षिण-पश्चिम में
- जुते हुए खेत के साक्ष्य प्राप्त हुए और ऐसा अनुमान है की लोग एक ही खेत में दो फसले उगते थे। दक्षिण-पूर्व में पूर्व-हड़प्पा काल के दोहरे जुते हुए खेत के अवशेष मिले हैं।
  - ✓ इसे संस्कृत साहित्य में "बहुधान्यदायक क्षेत्र" भी कहा जाता है।
  - ✓ खेत में "ग्रिड पैटर्न" भी देखा गया था।
  - ✓ गेहूँ, जौ, चना, रागी, बाजरा और सरसों के साक्ष्य भी मिले हैं।
- 2900 ईसा पूर्व तक यहाँ एक विकसित नगर था।
- लिपि- सैन्धव लिपि (अभी तक पढ़ी गई है)
- कालीबंगा से प्राप्त पुरातात्विक सामग्रियाँ
  - ✓ ताम्र औजार व मूर्तियाँ
    - ये संकेत करती है कि मानव प्रस्तर युग से ताम्रयुग में प्रवेश कर चुका था।
    - ताँबे की काली चूड़ियों की वजह से ही इसे कालीबंगा कहा गया।
  - ✓ बेलनाकार मुहर
    - सर्वाधिक मुहरें मिट्टी से बनी है एवं उन पर सैन्धव लिपि अंकित है जो दाएँ से बाएँ लिखी जाती थी।
    - पत्थर से बने तोलने के बाट का उपयोग करना मानव सीख गया था।
- मेसोपोटामिया की बेलनाकार मुहर प्राप्त हुई है।
  - ✓ बर्तन
    - मिट्टी के विभिन्न प्रकार के छोटे-बड़े बर्तन भी प्राप्त हुए है जिन पर चित्रांकन भी किया हुआ है।
    - बर्तन बनाने हेतु 'चारु' का प्रयोग होने लगा था ।
- कालीबंगा से प्राप्त हड़प्पाकालीन मृदभाण्डों को उनके आकार, बनावट और मुख्यतः उनके रंग के आधार पर 6 उपभागों में विभाजित किया गया है, तथा इन पर अलंकरण के लिए लाल धरातल पर काले रंग का ज्यामितीय, पशुपक्षी का चित्रण बहुतायत से मिलता है।
  - ✓ आभूषण
    - स्त्री व पुरुषों द्वारा प्रयुक्त होने वाले काँच, सीप, शंख, घोंघों आदि से निर्मित आभूषण प्राप्त
    - उदाहरण - कंगन, चूड़ियाँ आदि।
  - ✓ नगर नियोजन के दो टीले
    - पूर्वी टीला (नगर टीला)
    - पश्चिमी टीला (दुर्ग टीला)
  - ✓ कालीबंगा को हड़प्पा सभ्यता की तीसरी राजधानी कहा जाता है।
  - ✓ कृषि-कार्य संबंधी अवशेष
    - कपास की खेती के अवशेष प्राप्त
    - मिश्रित खेती (चना व सरसो) के साक्ष्य।
    - केवल लकड़ी की नाली के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
    - मिट्टी की अलंकृत ईंटों से बने चबूतरे, फर्श
- कालीबंगा से एक बच्चे की खोपड़ी में 6 छेद (शल्य क्रिया का प्राचीनतम उदाहरण) किये जाने का प्रमाण मिला है।
- 2600 ई.पू. में आये "भूकंप का सबसे प्राचीनतम साक्ष्य" मिला है।
  - ✓ बैल व बारहसिंघा की अस्थियाँ भी प्राप्त हुई।
- खिलौने
  - ✓ लकड़ी,धातु व मिट्टी आदि के खिलौने भी मोहनजोदड़ो व हड़प्पा की भाँति यहाँ से प्राप्त हुए हैं जो बच्चों के मनोरंजन के प्रति आकर्षण प्रकट करते हैं।
  - ✓ बैलगाड़ी के खिलौने प्राप्त हुए।
- सात आयताकार व अंडाकार अग्निवेदियाँ तथा बैल, बारहसिंघे की हड्डियाँ प्राप्त हुई।
  - ✓ यह साक्ष्य देता है कि मानव यज्ञ में पशु-बलि भी दिया करते थे।
  - ✓ दुर्ग (किला)
    - अन्य केन्द्रो से भिन्न एक विशाल दुर्ग (दोहरी रक्षा - प्राचीर से घिरा हुआ) के अवशेष भी प्राप्त हुए।
      - गढ़ (गढ़ी क्षेत्र) पश्चिम दिशा में स्थित है। निचला नगर एक प्राचीर द्वारा सुरक्षित है।
      - यहाँ के मकान, चौड़ी सड़कें, किला, कुएँ और दीवारें एक क्रमिक नगर योजना का हिस्सा हैं।
      - पत्थर की कमी के कारण दीवारें धूप में पकी ईंटों (कच्ची मिट्टी) से बनाई गई हैं।
    - मानव द्वारा अपनाए गए सुरक्षात्मक उपायों का प्रमाण है।

रंगमहल (हनुमानगढ)

- हनुमानगढ़ जिले में सरस्वती नदी / घग्गर नदी के निकट स्थित प्रस्तरयुगीन और धातुयुगीन सभ्यता हैं।
- उत्खनन- डॉ. हन्नारिड के निर्देशन (स्वीडिश पुरातत्विद) में (1952-54)

- यहाँ से कुषाणकालीन व उससे पहले की 105 ताँबे की मुद्राएँ प्राप्त हुई है।
- मुख्य रूप से चावल की खेती के साक्ष्य मिले है।
- मकानों का निर्माण ईंटो से हुआ था।
- रंगमहल से टोंटीदार घड़े, छोटे-बड़े प्याले, कटोरे, बर्तनों के ढक्कन, दीपदान, धूपदान, मिट्टी की पहियादार खिलौना गाड़ी, घंटाकार मृद्धात्र इत्यादि प्राप्त हुए है। रंगमहल से प्राप्त पात्रों पर मानव तथा पशु आकृतियां चित्रित है।
- रंगमहल से कुषाण शासकों के सिक्के एवं मिट्टी की मुहरें भी प्राप्त हुई है इस कारण इसे कुषाणकालीन सभ्यता के समान माना जाता है।

बरोर

- गंगानगर में सरस्वती नदी के तट पर स्थित है।
- उत्खनन - 2003
- प्राक्, प्रारंभिक तथा विकसित हड़प्पा काल में विभाजित।
- विशेषता - मृद्धांडों में काली मिट्टी के प्रयोग के प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
  - ✓ वर्ष 2006 - मिट्टी के पात्र में सेलखड़ी के 8000 मनके प्राप्त हुए हैं।
- हड़प्पाकालीन विशेषताओं के समान जैसे:
  - ✓ सुनियोजित नगर व्यवस्था
  - ✓ मकान निर्माण में कच्ची इटों का प्रयोग
  - ✓ विशिष्ट मृद्धांड परम्परा
- यहाँ से बटन के आकार की मुहरे प्राप्त हुई।

लौहयुगीन संस्कृति

इसे “आदि आर्यों की संस्कृति” के रूप में स्वीकार किया जा चुका है।

बैराठ सभ्यता

- बैराठ बाणगंगा नदी के किनारे वर्तमान कोटपुतली -बहरोड़ जिले के विराट नगर में स्थित लौहयुगीन सभ्यता है।
- प्राचीन नाम- विराटनगर
  - ✓ मत्स्य महाजनपद की राजधानी
- खोजकर्ता - 1837, कैप्टन बर्ट
- उत्खननकर्ता- 1936-37 में दयाराम साहनी, 1962-63 में नीलरतन बनर्जी तथा कैलाशनाथ दीक्षित।
- 1837 में कैप्टन बर्ट ने बीजक की पहाड़ी से अशोक के प्रथम भाब्रू शिलालेख की खोज की थी।
- बैराठ का पुरातात्विक महत्त्व
  - ✓ पाषाण, ताम्र पाषाण, लौहयुगीन सामग्री, अशोक का खंडित शिलालेख, शंख लिपि के प्रमाण बौद्ध विहार, बौद्ध चेत्य के अवशेष, आहत (पंचमार्क) मुद्राएँ, यूनानी मुद्राएँ, भारत में द्वितीय नागरीकरण आदि के विस्तृत साक्ष्य प्राप्त हुए हैं।
    - बैराठ से बड़ी मात्रा में शैल चित्र प्राप्त होने के कारण बैराठ को प्राचीन युग की चित्रशाला कहा जाता है।
    - उत्तर भारतीय काले चमकदार मृद्धांड वाली संस्कृति का प्रतिनिधित्व करने वाले स्थलों में राजस्थान में सबसे महत्वपूर्ण प्राचीन स्थल विराटनगर है।
- रहस्यमयी शंख लिपि के प्रचुर संख्या में प्रमाण प्राप्त हुए हैं।
- पुरातत्व के महत्व की तीन पहाड़ियाँ:
  - ✓ बीज़क डूँगरी
  - ✓ भीम डूँगरी (भोमली की डूंगरी)
  - ✓ महादेव डूँगरी
- 36 मुद्राएँ प्राप्त - 8 चांदी के पंचमार्क सिक्के, 28 इंडो-ग्रीक मुद्राएँ जिल्मे से 16 मुद्राएँ यूनानी शासक मिनेंडर की मानी जाती है
- बौद्ध धर्म के हीनयान सम्प्रदाय से संबंधित गोल बौद्ध मंदिर, स्तूप एवं बौद्ध मठ के अवशेष।
- जयपुर के राजा सवाई राम सिंह ने यहाँ खुदाई करवाई जिससे एक सोने की मंजूषा मिली, जिसमें भगवान बुद्ध के अवशेष है।
- भवन निर्माण के लिए मिट्टी की ईंटो का अत्यधिक प्रयोग।
- महाभारत के अनुसार, यहाँ में पांडवों ने अज्ञातवास के समय जीवनयापन किया था ।
- यहाँ 300 ई. पू. से 300 ई. तक के गोल चैत्यगृह मिले है।
- यहाँ से बौद्ध संस्कृति, महाभारत काल, महाजनपद काल, मौर्य काल, गुप्त काल, हर्ष काल आदि की जानकारी मिलती है।
- यहाँ के निवासी वस्त्र- बुनाई की तकनीक से परिचित थे।

रैढ सभ्यता

- टोंक जिले की निवाई तहसील में ढील नदी के किनारे स्थित।
- लोहे के औजार अत्यधिक मिलने और "मालवनाम जयह" अभिलेख वाले मालव सिक्कों की बड़ी संख्या में मिलने के कारण इसे प्राचीन राजस्थान का टाटानगर कहा जाता है।

Unleash the topper in you

- उत्खननकर्ता - 1938-40 में डॉ. केदारनाथ पूरी।
- 3075 आहत मुद्राएँ तथा 300 मालव जनपद के सिक्के प्राप्त हुए है।
  - ✓ मालव जनपद की लौह सामग्रियाँ भी मिली अंत: इसे मालव नगर भी कहा जाता है
  - ✓ यूनानी शासक अपोलोडोट्स का एक खंडित सिक्का भी प्राप्त हुआ है।
- मातृदेवी व शक्ति की मूर्तियों के अवशेष भी प्राप्त हुए है तथा पगड़ी पहनी स्त्री की मृणमूर्ति भी मिली है।
- विभिन्न आभूषण - कर्णफूल, हार, पायल आदि
- आलीशान इमारतों, मथुराकला और स्वस्तिक के अवशेष मिले है।
- अब तक का एशिया का सबसे बड़ा सिक्को का भण्डार भी मिला है।

नगर सभ्यता - खेड़ा सभ्यता

- यह टोंक जिले में उणियारा कस्बे के पास स्थित है।
- अन्य नाम -कर्कोट नगर, मातव नगर।
- उत्खननकर्ता- 1943-44 में श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- साक्ष्य
  - ✓ बड़ी संख्या में मालव सिक्के, गुप्तोत्तर काल की स्लेटी पत्थर से निर्मित महिषासुरमर्दिनी की मूर्ति, मोदक रूप में गणेश का अंकन और कमल धारण किए लक्ष्मी की खड़ी प्रतिमा आदि प्राप्त हुए है।
  - ✓ लाल रंग के मृदभाड़ एवं अनाज भरने के कलात्मक मटकों के अवशेष भी प्राप्त हुए है ।
- वर्तमान में इसे खेडा सभ्यता के नाम से जाना जाता है।

ईसवाल (उदयपुर)

- 2 हजार वर्ष तक निरंतर लोहा गलाने के प्रमाण मिले है।
  - ✓ यह उदयपुर की प्राचीन औद्योगिक बस्ती थी ।
- उत्खनन -राजस्थान विद्यापीठ, उदयपुर के पुरातत्व विभाग के निर्देशन में ।
  - ✓ उत्खनन में ऊँट के दाँत मिले है।
- प्राक् ऐतिहासिक काल से मध्यकाल तक का प्रतिनिधित्व करने वाली मानव बस्ती के पाँच स्तरों से प्रमाण प्राप्त हुए है।
- प्राप्त सिक्कों को प्रारंभिक कुषाणकालीन माना जाता है।

नोह (भरतपुर)

- उत्खनन - 1963-64 में रतनचन्द्र अग्रवाल के निर्देशन में।
- मृद्भांड - काले व लाल मृद्भांड संस्कृति
- यहाँ से मौर्यकालीन पॉलिस की हुई विशालकाय यक्ष/ जाखबाबा प्रतिमा और 16 रिंगवेल प्राप्त हुई है

भीनमाल, जालौर

- उत्खनन- 1953-54 में रतनचंद्र अग्रवाल के निर्देशन में ।
- खुदाई से मृद्भाण्ड (विदेशी प्रभाव) तथा शक क्षत्रपों के सिक्के प्राप्त हुए हैं।
- रोमन ऐम्फोरा (सुरापात्र) और यूनानी दुहत्थी सुराही भी प्राप्त हुई हैं।
- ईसा की प्रथम शताब्दी एवं गुप्तकालीन अवशेष भी मिले हैं।
- यह संस्कृत विद्वान महाकवि माघ का कार्यक्षेत्र एवं गुप्तकालीन विद्वान ब्रह्मगुप्त का जन्म स्थान माना जाता है।
- चीनी यात्री ह्वेनसांग ने यहाँ की यात्रा की थी।

नगरी सभ्यता/ मध्यमिका

- यह सभ्यता चित्तौडगढ में बेड़च नदी के तट पर स्थित है जिसका प्राचीन नाम मध्यमिका है।
- इस सभ्यता की खोज 1872 ई. में कार्लाइल द्वारा की गई।
- सर्वप्रथम उत्खनन 1904 ई. में डॉ. डी. आर. भण्डारकर द्वारा तथा तत्पश्चात 1961-62 में केन्द्रीय पुरातत्व विभाग द्वारा करवाया गया।
- यहाँ से शिवि जनपद के सिक्के तथा गुप्तकालीन कला के अवशेष प्राप्त हुए हैं।
- प्राचीन काल में माध्यमिका पतंजलि के महाभाष्य में तथा महाभारत में मिलता है।
- नगरी सभ्यता से ही घोसूण्डी अभिलेख (द्वितीय शताब्दी ईसा पूर्व) प्राप्त हुआ है।

अन्य महत्त्वपूर्ण प्राचीन सभ्यताएँ

आर्य सभ्यता

- यह एक ग्रामीण सभ्यता के रूप में विकसित हुई।
- आर्यवासियों ने पशुपालन के साथ कृषि को भी अपनाया था।
- राजस्थान में आर्य सर्वप्रथम उत्तर पूर्वी भाग में आकर बसे थे।
- साक्ष्य – अनूपगढ़ जिला व तरखान वाला डेरा (श्री गंगानगर) से प्राप्त हुए है।
- महत्वपूर्ण स्थल- जोधपुरा, बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़), नोह (भरतपुर), सुनारी (नीमकाथाना)।

बागोर सभ्यता

- भीलवाड़ा में बागोर के निकट कोठारी नदी के किनारे स्थित पाषाणकालीन सभ्यता स्थल है।
- उत्खननकर्ता – 1967-70 में डॉ. वीरेन्द्रनाथ मिश्र, डॉ. एल.एस .लेश्निक
- मुख्य उत्खनन स्थल - महासतियों का टीला I
- यह “आदिम संस्कृति का संग्रहालय” माना जाता है तथा यहाँ से 14 प्रकार की कृषि के अवशेष मिले है।

- मुख्य कार्य - कृष, पशुपालन व आखेट
- पाँच मानव कंकाल प्राप्त - जो सुनियोजित ढंग से दफ़नाए गये थे तथा एक कंकाल के गले में पत्थर व हड्डियों के हार के अवशेष मिले ।
- पाषाण युग की सर्वाधिक सामग्री प्राप्त हुए है।
  - ✓ मुख्य उपकरण- ब्लेड, छिद्रक, स्क्रेपेर, चंद्रिक
  - ✓ इसके अतिरिक्त तक्षणी, खुरचनी, तथा बेधक भी बड़ी मात्रा में प्राप्त ।
- उद्योग - बहुत ही छोटी-छोटी वस्तुओं का निर्माण और ज्यामितीय प्रारूपों की दृष्टि से अत्यंत उन्नत।
- भारत में पशुपालन के प्राचीनतम साक्ष्य मिलते है।

सुनारी सभ्यता

- झुंझुनू की खेतड़ी तहसील में कान्तली नदी के किनारे स्थित है।
- उत्खनन- 1980-81 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा।
- साक्ष्य -
  - ✓ लोहा गलाने की प्राचीनतम भट्टियाँ, स्लेटी रंग के मृदभांड (मौर्यकालीन सभ्यता के अवशेष जिनमें काली पॉलिश युक्त मृदपात्र है), मातृदेवी की मृण्मूतियाँ तथा धान संग्रहण का कोठा, शुंग तथा कुषाणकालीन अवशेष तथा लोहे के तीर, भाले के अग्रभाग, लोहे का कटोरा तथा कृष्ण परिमार्जित मुदपात्र भी मिले हैं।

नलियासर सभ्यता

- जयपुर जिले में सांभर के निकट स्थित है।
- चौहान वंश से पूर्व की सभ्यता के प्रमाण प्राप्त हुए है।
- ब्राह्मी लिपि में लिखित कुछ मुहरें प्राप्त हुई।
  - ✓ आहत मुद्राएँ, उत्तर इण्डोसेनियन सिक्के, कुषाण शासक हुविस्क, इण्डोग्रीक, यौधेयगण तथा गुप्तकालीन चाँदी के सिक्के प्राप्त ।
  - ✓ 105 कुषाणकालीन सिक्के ।

कुराड़ा सभ्यता

- परबतसर (डीडवाना – कुचामन) में स्थित ताम्रयुगीन सभ्यता स्थल है।
- ताम्र उपकरणों के अतिरिक्त प्रणालीयुक्त अर्घ्यपत्र भी प्राप्त हुआ है।

आलनिया सभ्यता

- आलनिया नदी (कोटा)
- चट्टानेश्वर मंदिर के पास पाँच समूहों में प्रागैतिहासिक एवं अन्य कालों के 35 शैलाश्रय खोजे गए है ।
- खोजकर्ता - डॉ. जगतनारायण श्रीवास्तव, डॉ. विष्णु श्रीधर वाकणकर

कणसवा सभ्यता

- कोटा में स्थित है।
- मौर्य शासक धवल का 738 ई. से संबंधित लेख प्राप्त।

नैनवा सभ्यता

- बूँदी में स्थित है।
- उत्खनन- श्रीकृष्ण देव द्वारा।
- यहाँ से 2000 वर्ष पुरानी महिषासुरमर्दिनी की मृण्मूर्ति प्राप्त हुए है।

सी.ए. हैकेट ने बूँदी और जयपुर, इन्द्रगढ में यहाँ से क्वार्टजाइट से बनी पूर्व पाषाणकालीन हस्तकुठार (कुल्हाड़ी) सर्वप्रथम प्राप्त की थी

सोंथी सभ्यता

- बीकानेर में स्थित है।
- खोजकर्ता- अमलानंद घोष (1953 में)
- इसके दो केंद्र – पुगल, सावणिया
- कालीबंगा प्रथम के नाम से प्रसिद्ध है।
- हड़प्पाकालीन सभ्यता के अवशेष प्राप्त/हड़प्पा सभ्यता का उद्गम स्थल।

बयाना सभ्यता

- भरतपुर में स्थित है।
- प्राचीन नाम -श्रीपंथ
- गुप्तकालीन सिक्के एवं नील की खेती के साक्ष्य प्राप्त हुए है।

तिलवाड़ा सभ्यता

- बालोतरा जिले में लूणी नदी के किनारे स्थित ताम्र पाषाणकालीन स्थल है।
- इस सभ्यता का उत्खनन डॉ. वी. एन. मिश्र के नेतृत्व में 1966-67 में राजस्थान राज्य पुरातत्व विभाग द्वारा किया गया ।
- साक्ष्य -
  - ✓ पशुपालन के साक्ष्यों की प्राप्ति
  - ✓ उत्तर पाषाण युग के भी अवशेष प्राप्त।
  - ✓ पाँच आवास स्थलों के अवशेष।
  - ✓ एक अग्निकुण्ड मिला है जिसमें मानव अस्थि भस्म तथा मृत पशुओं के अवशेष मिले।

Unleash the topper in you

राजस्थान के प्रमुख पुरातात्विक स्थल

काल	स्थल	औज़ार
पुरापाषाण	➢ डीडवाना (प्राचीनतम स्थल), जायल (नागौर),बैराठ (कोटपुतली – बहरोड़) ➢ भानगढ़ (अलवर), इंद्रगढ़ (कोटा) ➢ बूढा पुष्कर (अजमेर) ➢ दर (भरतपुर)	हैण्डएक्स क्लीवर चापर चैपिंग
मध्यपाषाण (माइक्रोलिथ)	➢ बागोर (भीलवाड़ा) ➢ बैराठ (कोटपुतली-बहरोड़) ➢ सोजत ➢ धनेरी ➢ तिलवाड़ा	स्क्रेपर प्वाइंट
नवपाषाण	➢ इस काल में कोई भी सभ्यता या संस्कृति राजस्थान में नहीं मिलती है।	सेल्ट बसूला कुल्हाड़ी
ताम्रपाषाण	➢ आहड़ (उदयपुर) ➢ गिलुण्ड(राजसमन्द) ➢ कालीबंगा(हनुमानगढ़) ➢ झर (जयपुर) ➢ बागोर (भीलवाड़ा) ➢ तिलवाड़ा (बाड़मेर) ➢ बालाथल (उदयपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
ताम्रयुगीन	➢ गणेश्वर (सीकर) ➢ बेणेश्वर (डूँगरपुर) ➢ नंदलालपुरा ➢ किराड़ोत ➢ चीथवाडी (जयपुर) ➢ साबणियां ➢ पूंगल (बीकानेर) ➢ कुराड़ा (परबतसर) ➢ पिण्ड पाड़लिया (चित्तौड़) ➢ पलाना (जालौर) ➢ कोल माहौली (सवाई माधोपुर) ➢ मलाह (भरतपुर)	विविध प्रकार के औज़ार
लौहयुगीन	➢ नोह (भरतपुर), बैराठ, जोधपुरा ➢ सांभर (जयपुर), सुनारी (झुंझुनू), रैढ ➢ नगर ➢ नैनवा (टोंक), भीनमाल (जालौर), नगरी (चित्तौड़गढ़) ➢ चक - 84 ➢ तरखानवाला (गंगानगर)	विविध प्रकार के औज़ार

2 CHAPTER मेवाड़ का इतिहास

- मेवाड़ - गुजरात और मध्य प्रदेश की सीमा से लगा राजस्थान का दक्षिण पश्चिमी क्षेत्र।
- जिले: भीलवाड़ा, राजसमंद, चित्तौड़गढ़, प्रतापगढ़ और उदयपुर
- विस्तार-
  - ✓ उत्तर पश्चिम: अरावली से घिरा हुआ।
  - ✓ दक्षिणी क्षेत्र : पहाड़ी - जंगलों से युक्त ।
- मूल रूप से मेदपाट (मेर/ मेद् जाति के अधीन) - समय के साथ भ्रष्ट रूप में मेवाड़ बन गया।
  - ✓ अन्य नाम - प्रग्वाट, शिवी, मेदपाट
- एकलिंगजी - गुहिलों द्वारा निर्मित 10वीं शताब्दी के सबसे पुराने मंदिरों में से एक।
  - ✓ उदयपुर के पास स्थित

मेवाड के महत्वपूर्ण शासक

गुहिल - सिसोदिया वंश

- आदि पुरुष: गुहिल/ गुहादत्त (566 ईस्वी)
- गुहिल के बारे में जानकारी का प्रमुख स्त्रोत सामोली अभिलेख है।
- पिता: शिलादित्य; माता: पुष्पवती
- मुहणौत नैणसी ने गुहिलों की कुल 24 शाखाओं का वर्णन किया है।

बप्पा रावल

बप्पा की माता और पत्नी ने नागदा में शिव के दो मंदिर बनवाये जो अब सास- बहू के मंदिर के नाम से विख्यात है। (सहस्त्रबाहू मंदिर)

- बप्पा रावल का जन्म वि.सं. 769 (712-13 ई.) में माना जाता है।
- इस प्रकार हारित ऋषि के आशीर्वाद से बापा को मेवाड़ का राज्य प्राप्त हुआ।
- राज प्रशस्ति के अनुसार बप्पा ने 734 ई. में चित्तौड़ के शासक मान मोरी को हराकर उस पर अधिकार कर लिया।
- राजधानी - नागदा
- उपाधि - शील, महेन्द्र, खुम्माण और कालभोज, राजगुरु, चक्कवै, हिन्दु, सूर्य।
- सोने के सिक्के चलाये जो वैभव का प्रतीक है।
- बप्पा रावल मुस्लिम सेना को हराते हुए अफगानिस्तान तक चला गया तथा वहाँ के शासक सलीम को हटाकर अपने भांजे को राजा बनाया। इसलिए इतिहासकार सी.वी. वैद्य इसकी तुलना चार्ल्स मोर्टेल (फ्रांसीसी सेनापति, जिसने यूरोप में सर्वप्रथम मुसलामानों को परास्त किया था) से करते हैं।
- रावलपिंडी का नाम उन्हीं के नाम पर पडा।
- उसने उदयपुर के निकट कैलाशपुरी में एकलिंग (लकुलीश) जी के मंदिर का निर्माण करवाया।

अल्लट

- पिता: भृत भट्ट
- 10वीं शताब्दी के आसपास मेवाड़ प्रदेश का शासक बना।
- आलु रावल भी कहा गया।
- आहड़ को दूसरी राजधानी बनाया तथा वहाँ एक वराह मंदिर का निर्माण करवाया।
- देवपाल परमार को परास्त करने में सफलता प्राप्त की।
- माता राष्ट्रकूटों की कन्या - इसलिये उसे राष्ट्रकूटों का सहयोग भी प्राप्त था।
- हूण कन्या हरियादेवी से विवाह कियातथा जिससे उसको हूणों का भी सहयोग प्राप्त था।

➢ माना जाता है की अल्लट ने सर्वप्रथम मेवाड़ में नौकरशाही का गठन किया (सारणेश्वर प्रशस्ति के अनुसार)।

नरवाहन

- अल्लट की मृत्यु के बाद नरवाहन मेवाड़ का शासक बना ।
- इसके समय का शिलालेख (971 ई.) एकलिंगजी में स्थित लकुलीश मंदिर में प्राप्त हुआ है, जिसमें मेवाड़ की राजधानी नागदा को ही बताया गया है।
- नरवाहन शिव का उपासक था।
- आहड़ अभिलेख (आटपुर) 977 ई. के अनुसार नरवाहन का विवाह चौहान राजा जेजय की पुत्री से होना बताया गया है।

Toppers Unleash the topper in you

- डॉ. गौरीशंकर हीराचंद ओझा के अनुसार इसके वंशजों ने ही भावनगर , पालिताना, रेवाकाण्ठा एवं राजपीपला में गुहिल वंश का शासन स्थापित किया था।

उत्पत्ति के सिद्धान्त
- डॉ. गौरी शंकर ओझा गुहिलों को सूर्यवंशी मानते हैं।
- डी.आर. भण्डारकर एवं गोपीनाथ शर्मा मेवाड़ के गुहिलों को ब्राह्मण वंश से मानते हैं।

जैत्रसिंह (1213-53 ईस्वी)

- चीरवा शिलालेख में इन्हें एक शक्तिशाली शासक के रूप में वर्णित किया गया है।
- मेवाड़-नाडौल के बीच की लड़ाई समाप्त की।
  - ✓ नाड़ौल के शासक उदयसिंह द्वारा पौत्री रूपादेवी का विवाह जैत्रसिंह के पुत्र तेजसिंह से किया गया।
- जयसिंह सूरी की पुस्तक 'हम्मीर मर्दमर्दन' में भूताला के युद्ध की जानकारी मिलती है। इसमें इल्तुतमिश को हम्मीर कहा गया है।
- भूताला का युद्ध: 1227 ई.- जैत्रसिंह और इल्तुतमिश के मध्य हुआ जिसमे जैत्रसिंह ने इल्तुतमिश को परास्त कर दिया परन्तु इस अभियान में मेवाड़ की राजधानी नागदा को भारी नुकसान उठाना पड़ा जिस वजह से जैत्रसिंह ने अपनी राजधानी से चित्तौड़ स्थानांतरित कर लिया।
- जैत्रसिंह का काल - मध्यकालीन मेवाड़ के इतिहास में स्वर्णकाल (डॉ. दशरथ शर्मा के अनुसार)।

तेजसिंह (1253-1273 ई.)

- जैत्रसिंह का पुत्र - 1253 ई. में मेवाड़ की गद्दी पर बैठा।
- उपाधि: ''परमभट्टारक'', महाराजाधिराज और ''परमेश्वर'।
- उनकी रानी जयतल देवी ने चित्तौड़ में श्याम पार्श्वनाथ के मंदिर का निर्माण करवाया।
- उन्हीं के समय "श्रावक प्रतिक्रमणसूत्रचूर्णि" पुस्तक लिखी गई।

दिल्ली के सुल्तान गयासुद्दीन बलबन ने मेवाड़ पर आक्रमण किया परन्तु उसको सफलता नहीं मिली।

समरसिंह (1273 - 1302 ई.)

- तेजसिंह का पुत्र ।
- 8 शिलालेख - अपना प्रभाव बनाने के लिये छोटे राज्य के संबंध में कठोर नीति का अनुसरण ।

- समरसिंह ने तुर्कों को गुजरात से निकाला और गुजरात का उद्धार किया।

- राज्य में जीवहिंसा रोक दी थी।
- प्रसिद्ध शिल्पी और कलाकार - पदमसिंह, केलसिंह, कल्हण, कर्मसिंह।

साका = जौहर + केसरिया
- जौहर – यह राजस्थान की प्राचीन प्रथा है जिसमें महिलाएं अपने स्वाभिमान और सम्मान की रक्षा के लिए अपने प्राण न्यौछावर कर देती थी।
- केसरिया – जब वीरों को लगता था कि वे युद्ध नहीं जीत पाएंगे तब मरने-मारने की भावना लेकर सिर पर केसरिया धारण करते थे और युद्ध में उतर जाते थे।

- रावल समरसिंह के दो पुत्र थे:
  - ✓ कुंभकर्ण
    - ■ उसने नेपाल में गुहिल वंश की स्थापना की जिससे नेपाल के राजवंश का उदय हुआ और वहाँ के शासको ने 'राणा' की उपाधि धारण की।
  - ✓ रावल रतनसिंह
    - ■ वह समरसिंह के बाद मेवाड़ का शासक बना।
    - ■ इसका शासनकाल 1302 ई.- 1303 ई. तक का था।

रतन सिंह (1302-1303 ई.)
- समरसिंह का पुत्र - 1302 ई. के आसपास चित्तौड़ का शासक बना।
- 1303 ई .में अलाउद्दीन ने धोखे से रतनसिंह को बंदी बना लिया और उसे बाद में गोरा-बादल और पद्मिनी ने मुक्त करवाया।

- रतनसिंह के चित्तौड़ के युद्ध में वीरगति प्राप्त होने के पश्चात समूची रावल शाखा का अंत हो गया।
- मेवाड़ का रतनसिंह गुहिल वंशीय (गहलोत) रावल शाखा के अंतिम शासक थे।

चितौड़ का युद्ध (1303 ई.)/ चितौड का पहला साका
- मेवाड़ के शासक रावल रतनसिंह और दिल्ली के सुल्तान अलाउद्दीन खिलजी के मध्य।
- अलाउद्दीन के आक्रमण के कारण:
  - ✓ चितौड़ का सामरिक महत्त्व
    - ■ गुजरात, मालवा, मध्यप्रदेश आदि भागों के व्यापारिक मार्ग यही से होकर जाते थे।
  - ✓ अलाउद्दीन की साम्राज्यवादी लिप्सा ।
  - ✓ रत्नसिंह की खूबसूरत पत्नी पद्मिनी को प्राप्त करने का उद्देश्य।

- इस युद्ध का वर्णन अमीर खुसरो के ग्रंथ खाजाइन-उल-फुतूह में मिलता है।

- मेवाड़ का प्रथम साका - 1303 ईस्वी
  - ✓ पद्मिनी + 1600 अन्य औरतों ने जौहर कर लिया।
  - ✓ राजपूतों ने रतन सिंह के नेतृत्व में केसरिया धारण किया।

- अलाउद्दीन खिलजी ने अपने पुत्र खिज्र खां को चित्तौड़ सौंपकर इसका नाम बदलकर खिज्राबाद कर दिया। कालांतर में चित्तौड़ मालदेव सोनगरा को सौंप दिया गया।

गुहिल/गहलोत वंश की रावल शाखा के शासको का क्रम
बापा रावल-अल्लट -नरवाहन -जैत्रसिंह -तेजसिंह -समरसिंह -रतन सिंह

सिसोदिया वंश एवं इसके प्रतापी शासक

हम्मीर (1326-1364 ई.)

- 1326 ई. में सिसोदा शाखा के राणा अरिसिंह के पुत्र राणा हम्मीर ने चित्तौड़गढ़ पर अधिकार कर लिया।
- इन्हें गुहिल वंश की सिसोदिया शाखा के आदिपुरुष कहा जाता है
- महाराणा/ राणा की उपाधि धारण की।
- उसे कीर्ति स्तम्भ प्रशस्ति में हम्मीर को विषम घाटी पंचानन कहा गया
  - ✓ रसिक प्रिया - “वीर राजा”
- उसने चित्तौड़ में अन्नपूर्णा माता का मंदिर बनवाया।
- राणा कुंभा की कीर्ति स्तंभ प्रशस्ति में राणा हम्मीर को 'विषमघाती पंचानन (प्रचंड आक्रमणों में सिंह के समान)' कहा गया है।

- हम्मीर को "मेवाड़ का उद्धारक" कहा जाता है।
- सिंगोली (बाँसवाड़ा) का युद्ध
  - ✓ हम्मीर और मुहम्मद बिन तुगलक के मध्य।
  - ✓ मुहम्मद बिन तुगलक परास्त हुआ।

लक्षसिंह (राणा लाखा) (1382-1421 ई.)

- राणा क्षैत्रसिंह के पुत्र।
- उनके समय उदयपुर की पिछोला झील का निर्माण छीतर बंजारे ने करवाया था।
- इनके शासनकाल में जावर की खानों में चाँदी का उत्खनन हुआ जिससे उसने कई किलों का निर्माण करवाया।
- मारवाड़ के राजा चूंडा की पुत्री हंसाबाई की शादी मेवाड़ के राजा लाखा से हुई।
- इसी समय लाखा के बेटे चुंडा ने प्रतिज्ञा की कि वह मेवाड़ का अगला राजा नहीं बनेगा बल्कि हंसाबाई का बेटा मेवाड़ का अगला राजा होगा ।

राणा चूंडा - 'मेवाड़ का भीष्म पितामह'
- राणा लाखा ने चूंडा को मोकल का रक्षक नियुक्त किया।
- यह नियम बना दिया कि भविष्य में मेवाड़ के महाराणाओं के सभी पट्टों, परवानों और सनदों पर चूंडा और उसके वंशजों के भाले का निशान अंकित रहेगा।
- चूंडा को अन्य अधिकार भी दे दिए गए जैसे-
  - ✓ मेवाड़ के 16 ठिकानों में से 4 (सलूम्बर सहित) चूंडा को दे दिए गए।
  - ✓ सलूम्बर का सामंत ही मेवाड़ के राजा का राज्याभिषेक करेगा।
  - ✓ सलूम्बर का सामंत मेवाड़ सेना का सेनापति होगा।
  - ✓ राणा की अनुपस्थिति में सलुम्बर का सामंत राजधानी की रक्षा करेगा।

मोकल (1421-1433 ई.)

- महाराणा लाखा की मृत्यु के समय मोकल केवल 12 वर्ष का था।
  - ✓ अतः राजकार्य चूंडा की देखरेख में किया जाता था।
- चित्तौड़ में विष्णु मंदिर (द्वारिकानाथ) का निर्माण करवाया और परमार भोज द्वारा बनवाए गए त्रिभुवन नारायण (मोकल का मंदिर/ समाधिश्वर मंदिर) का जीर्णोद्धार करवाया।
- श्री एकलिंग जी के मंदिर के चारों ओर परकोटा बनवाया।
- मोकल ने अपनी रानी गौराम्बिका की याद में श्रृंगी ऋषि बावड़ी का निर्माण करवाया।
- इन्होने योगेश्वर और भट्टविष्णु जैसे विद्वानों का संरक्षण किया।
- अपने भाई बाघसिंह के नाम से बाघेला तालाब बनवाया गया।
- झीलवाड़ा में चाचा, मेरा, और महपा पंवार द्वारा उसकी हत्या कर दी गयी।

महाराणा कुम्भा (1433-1468 ई.)

- मोकल एवं सौभाग्यदेवी का ज्येष्ठ पुत्र
- रक्षक: रणमल
- उसका काल - मेवाड़ के इतिहास में कला, साहित्य और स्थापत्य के क्षेत्र में स्वर्ण युग ।

➢ दो पीढ़ियों से राठौडों का प्रभाव जो मेवाड़ को जकड़े हुये था उससे छुटकारा दिलाने का श्रेय महाराणा कुम्भा हो ही जाता है।
➢ मेवाड़ के सरदारों ने रणमल की प्रेमिका भारमली को भी अपनी ओर मिलाकर रणमल की 1438 ई .में हत्या करवा दी।
➢ इस प्रकार उन के कूटनीतिक प्रयास सफल रहे और मेवाड़ पर राठौड़ों का प्रभाव कम हो गया।

प्रारम्भिक विजय

➢ रणकपुर के एक शिलालेख के अनुसार कुम्भा ने सारंगपुरा, नागौर गागरोन, नरायण, अजयमेरू, मण्डोर, मांडलगढ़, बूँदी आदि किलों पर अधिकार कर लिया।
➢ आबू व हाडौती पर विजय प्राप्त की ।
➢ मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी को पराजित किया था

सारंगपुर का युद्ध - 1437 ईस्वी

➢ कुम्भा और मालवा (मांडू) के सुल्तान महमूद खिलजी के मध्य हुआ। (विजयी -कुम्भा)
➢ तत्कालीन कारण –
1. महमूद खिलजी ने मोकल के हत्यारों को शरण दी थी।
2. कुम्भा ने महमूद खिलजी के विद्रोही उमर खां को सैनिक सहायता देकर सारंगपुर पर अधिकार करवा लिया।
3. कुम्भा तथा महमूद खिलजी की साम्राज्य विस्तार महत्त्वकांक्षा।
4. मालवा के महपा पँवार को मेवाड़ को सौंपने से इंकार

➢ इस उपलक्ष्य में राणा ने चित्तौड़ में विजय स्तंभ का निर्माण करवाया।
➢ मालवा और गुजरात की संयुक्त सेनाओं को पराजित किया।

कुम्भा की उपाधियां
➢ अभिनव भारताचार्य. हिन्दू सुरताण (मुस्लिम शासकों द्वारा दी गई उपाधि), राणो रासो (साहित्यकारों का आश्रयदाता), राजगुरू, हालगुरू, चापगुरू, परमगुरू, महाराजाधिराज, नरपति, अश्वपति, गजपति, वीणा, वादन प्रवीण

आवल-बावल की संधि - 1453 ईस्वी

➢ कुम्भा + जोधा के मध्य हुई।
➢ मंडोर जोधा को वापस दे दिया गया।
➢ सोजत - मेवाड़ और मारवाड़ के मध्य सीमा स्थापित की गई ।
➢ कुम्भा के बेटे रायमल का विवाह जोधा की बेटी श्रृंगार कँवर से किया गया।

कुम्भा एवं गुजरात

नागौर युद्ध (1456 ई.)

➢ नागौर के शम्सखां की सहायता की।
➢ नागौर युद्ध में कुम्भा की जीत हुई।

मालवा-गुजरात का संयुक्त अभियान/ चंपानेर की संधि (1456 ईस्वी)

➢ मालवा शासक महमूद खिलजी और गुजरात शासक कुतुबुद्दीन शाह के मध्य राणा कुम्भा के विरुद्ध।
➢ उद्देश्य: कुंभा की शक्ति का पतन करना।
➢ दोनों राज्यों की सेनाओं ने बदनौर नामक स्थान पर राणा कुंभा से संघर्ष किया।
➢ 'कीर्ति-स्तम्भ-प्रशस्ति' व 'रसिक प्रिया' के अनुसार इस मुकाबले में कुम्भा विजयी रहा।

बदनौर का युद्ध 1457
➢ इस युद्ध मे एक तरफ मालवा के शासक महमूद खिलजी, गुजरात के शासक शाह और दूसरी तरफ महाराणा कुंभा थे।
➢ इस युद्ध में महाराणा कुंभा विजयी हुआ। इस विजय के उपलक्ष्य मे कुंभा ने बदनौर (ब्यावर) मे कुशाल माता का मंदिर बनवाया। इस विजय के उपलक्ष्य में महाराणा कुंभा ने कुंभलगढ़ का किला बनवाया।

नागौर-विजय (1458 ईस्वी)

➢ कुम्भा ने 1458 ई. में नागौर पर आक्रमण किया जिसका
➢ कारण श्यामलदास के अनुसार-
✓ नागौर के हाकिम शम्सखां और मुसलमानों द्वारा बहुत गो-वध करना।
✓ मालवा के सुल्तान के मेवाड़ आक्रमण के समय शम्सखां ने उसकी महाराणा के विरुद्ध सहायता की थी।
✓ शम्सखां ने किले की मरम्मत शुरू कर दी थी। अतः महाराणा ने नागौर पर आक्रमण कर उसे जीत लिया।
✓ नागौर विवाद ही मेवाड़ – गुजरात संघर्ष का प्रारंभिक कारण था।

महाराणा कुम्भा की सांस्कृतिक उपलब्धियाँ

1. किले

➢ उन्होंने 84 में से 32 किलों का निर्माण करवाया।
✓ बसंती दुर्ग (सिरोही के निकट), बैराट दुर्ग (बदनौर के निकट), अचलगढ़ दुर्ग (आबू), कुम्भलगढ़ दुर्ग (राजसमंद), मचान दुर्ग
➢ राणा कुम्भा को "राजस्थान की स्थापत्य कला का जन्मदाता" कहा जाता है।

Unleash the topper in you

कुम्भलगढ़ दुर्ग

- किले के अंदर लघु दुर्ग - कटारगढ़ दुर्ग।
  - ✓ सबसे ऊँचा स्थान
  - ✓ कुम्भा का निवास
  - ✓ मेवाड़ की आँख भी कहा जाता है
  - ✓ कुम्भा की स्थापत्य कला का श्रेष्ठ उदाहरण ।
  - ✓ मामादेव का मंदिर और पृथ्वीराज का स्मारक बहुत प्रसिद्ध है।
  - ✓ अबुल फजल के अनुसार "यह दुर्ग इतनी ऊँचाई पर स्थित है कि ऊपर देखने पर पगड़ी भी सिर से नीचे गिर जाती है"।

2. स्तंभ

विजय स्तंभ

- मालवा और गुजरात की सेना पर विजय के उपलक्ष्य में
- स्थापत्यकार- जैता, नापा और पूंजा
- प्रशास्तिकार कवि अत्रि एवं महेश
- 9 मंजिला इमारत
- लंबाई – 122 फीट, चौड़ाई – 30 फीट
- तीसरी मंजिल में 9 बार अल्लाह शब्द लिखा है।
- इस स्तम्भ को "भारतीय मूर्तिकला का विश्वकोश" कहा जाता है।
- मेवाड़ महाराणा स्वरुप सिंह ने पुनर्निर्माण करवाया।
- जेम्स टॉड ने इसकी तुलना कुतुबमीनार से की।
- यह राजस्थान की पहली इमारत है जिस पर 15 अगस्त 1949 को डाक टिकट जारी किया गया।

कीर्ति स्तंभ

- चित्तौड़ किले में 7 मंजिला इमारत है।
- 12वीं शताब्दी में जैन व्यापारी जीजा शाह बघेरवाल ने इसका निर्माण करवाया था।
- यह भगवान आदिनाथ को समर्पित है, इसे आदिनाथ स्मारक कहते हैं।

कीर्तिस्तंभ प्रशस्ति – 3 दिसम्बर, 1460 ई.

प्रशस्तिकार – अत्रि भट्ट एवं महेश भट्ट

- इस प्रशस्ति में बप्पा से लेकर कुम्भा तक मेवाड़ के गुहिल वंशीय शासकों की उपलब्धियाँ प्राप्त होती है।
- इस प्रशस्ति में कुम्भा के अभियानों, विरुदों, रचित ग्रंथों की जानकारी मिलती है।

3. कुम्भा कालीन मंदिर:

- श्रृंगारचंवरी मंदिर (शांतिनाथ जैन मंदिर)
  - ✓ इसका निर्माण वेला भंडारी ने करवाया (चित्तौड़ के कोषाध्यक्ष)
  - ✓ प्रसिद्द: कुम्भास्वामी मंदिर, श्रृंगारचंवरी मंदिर (चित्तौड़), मीरा मंदिर, रणकपुर का जैन मंदिर।
  - ✓ वह स्वयं वीणा वादक थे।
    - गुरु : सारंग व्यास
- रणकपुर जैन मंदिर
  - ✓ 1439 में जैन व्यापारी धरणकशाह ने इन मंदिरों का निर्माण करवाया।
  - ✓ मुख्य मंदिर :
    - चौमुखा मंदिर – इस मंदिर में भगवान आदिनाथ की मूर्ति है। इस मंदिर में 1444 स्तंभ है, इसीलिए इसे स्तंभों का अजायबघर कहा जाता है।
    - वास्तुकार – देपाक।

साहित्य

- उनके द्वारा लिखी गई किताबें : सुधाप्रबंध, संगीत सुधा, संगीतराज (5 भाग), संगीतमीमांसा ।
  - ✓ चण्डीशतक की व्याख्या, गीतगोविन्द की रसिक प्रिया टीका और संगीतरत्नाकर की टीका।
- कुम्भा द्वारा रचित अन्य ग्रंथ:
  - ✓ कामराज रतिसार (7 अंग)
  - ✓ सुधा प्रबंध - रसिक प्रिया का पूरक ग्रन्थ
  - ✓ राजवर्णन - एकलिंग माहात्म्य का प्रारम्भिक भाग
  - ✓ संगीतक्रम दीपिका
  - ✓ नृत्यरत्नकोष
- प्रसिद्ध जैन विद्वान: सोम सुन्दर, जयचन्द्रसूरी, सोमदेव, भुवन, सुन्दरसूरि, माणिक्य, सुन्दरगणि, तिल्ला भट्ट, नाथा आदि।
- दरबारी विद्वान
  - ✓ मंडन - उन्होंने देवमूर्ति प्रकरण, प्रासाद मंडन, राजवल्लभ / भूपतिवल्लभ, रूपमंडन, वास्तुमंडन, वास्तुशास्त्र और वास्तुकार लिखी।
  - ✓ मंडन के पुत्र गोविन्द - उद्धारधोरणी, कलानिधि, द्वारदीपिका
  - ✓ मेहा कुम्भा
  - ✓ हीरानन्द मुनि (कुंभा के गुरु (उपाधि – कविराज)
  - ✓ कान्ह व्यास - एकलिंगमाहात्म्य के लेखक

> ➢ कुम्भा की पुत्री रमाबाई को उनके संगीत प्रेम के लिए 'वागीश्वरी' की उपाधि दी गई।
> ➢ कुम्भा ने जैनों का तीर्थ यात्रा कर हटा दिया था।

महाराणा कुम्भा की मृत्यु

- पुत्र उदा ने 1468 ईस्वी में 'मामादेव तालाब' के किनारे हत्या कर दी ।

रायमल (1468-1509 ई.)

- जावर के पास लड़ाई में उदा को पराजित कर उसने 'दाड़िमपुर विजय' प्राप्त की और चित्तौड़ पहुँच गया।
- पिता: कुम्भा
- अद्भुतजी के मंदिर का निर्माण करवाया और एकलिंग जी मंदिर का जीर्णोद्धार करवाया।
- प्रमुख शिल्पकार - अर्जुन
- विद्वान - गोपाल भट्ट और महेश
- उनकी रानी श्रृंगारदेवी ने घोसुण्डी की बावड़ी बनवाई।

पृथ्वीराज

- रायमल का पुत्र।
- उन्हें "उड़ना राजकुमार" कहा जाता था ।
- उन्होंने अजमेर के किले का नाम बदल कर अपनी पत्नी तारा के नाम पर तारागढ़ कर दिया ।
- उनका स्मारक कुम्भलगढ़ दुर्ग में है ।

जयमल

- रायमल का पुत्र ।
- सोलंकियों से लड़ाई में उनकी मृत्यु हो गई ।

संग्राम सिंह प्रथम / महाराणा सांगा (1509ई. - 1528ई.)

- रायमल का पुत्र ।
- उस समय दिल्ली में सिकंदर लोदी, गुजरात में महमूद शाह बेगड़ा और मालवा में नासिरूद्दीन का शासन था।

खातोली का युद्ध (1517 ई.)

- मेवाड़ के महाराणा सांगा एवं दिल्ली के सुल्तान इब्राहिम लोदी के मध्य।
- महाराणा सांगा जीत गये ।

बारी की युद्ध (1518 ई.)

- महाराणा सांगा ने धौलपुर के पास 'बारी' नामक स्थान पर 1518 ई. में इब्राहिम लोदी के सेनानायकों को पराजित किया।

गागरोन का युद्ध (1519 ई.)

- मालवा के सुल्तान महमूद खिलजी द्वितीय एवं मेवाड़ महाराणा सांगा के बीच।
- महाराणा सांगा ने मालवा से निष्कासित सरदार मेदिनीराय की सहायता कर उसे चंदेरी एवं गागरोन की जागीर प्रदान की। इस कारण महमूद खिलजी द्वितीय ने मेवाड़ से युद्ध का अवसर समझकर 1519 ई. में गागरोन पर आक्रमण किया।
- महाराणा सांगा का मेदिनीराय की सहायतार्थ आने से महमूद खिलजी गागरोन के युद्ध में पराजित हुआ और बंदी बना लिया गया।

बयाना का युद्ध (16 फरवरी, 1527)

- यह महाराणा सांगा और बाबर के बीच लड़ा गया पहला युद्ध था।
- इस युद्ध में महाराणा सांगा ने बाबर को पराजित कर दिया।
  - ✓ यह राणा सांगा की अंतिम महान विजय थी।

खानवा का युद्ध (17 मार्च, 1527)

- सांगा और बाबर के मध्य 17 मार्च, 1527 खानवा का युद्ध लड़ा गया । (वीर विनोद के अनुसार 16 मार्च)
- बाबर विजयी (तोपखाने और तुलुगमा पद्धति का प्रयोग)
- बाबर ने गाज़ी की उपाधि धारण की एवं जिहाद की घोषणा की।
- राणा सांगा ने हसन खां और महमूद लोदी को शरण दी ।
- राणा की सहायता के लिये उसकी सेना में महमूद लोदी, मारवाड़ के मालदेव राजा-गंगा, सिरोही के अखेराज देवड़ा, हसन खां मेवाती, आम्बेर का राजा पृथ्वीराज, ईडर का राजा भारमल, वीरमदेव मेडतिया, बागड़ का उदयसिंह, मेदिनीराय, बीकानेर का कुंवर कल्याणमल आदि शामिल थे।
- खानवा के युद्ध में सलहदी तवंर ने राणा सांगा का पक्ष बदल कर बाबर का साथ दिया था
- झाला अज्जा ने खानवा के युद्ध में राणा साँगा के घायल हो जाने के बाद उनका राज-चिह्न धारण करके युद्ध जारी रखा था
- बसवा (दौसा) – घायल सांगा का ईलाज किया गया।
- ईरिच (UP) – यहाँ साथियों ने सांगा को जहर दिया।

- कालपी (UP) – यहाँ सांगा की मृत्यु हो गई।
- मांडलगढ़ में सांगा की छतरी है।
- महाराणा सांगा के मृत शरीर का दाह संस्कार 30 जनवरी, 1528 को मांडलगढ़ स्थान पर किया गया-

खानवा युद्ध के कारण
- दोनों की राजनैतिक महत्त्वकांक्षा में टकराव।
- सांगा ने दिल्ली सल्तनत के कई क्षेत्रों पर अधिकार कर लिया।
- राजपूत-अफगान गठबंधन।
- बाबर ने सांगा पर वचन भंग का आरोप लगाया।
- सांगा ने बयाना किले पर अधिकार कर लिया।

सांगा की हार के कारण
- सांगा की सेना में एकता की कमी।
- बाबर का तोपखाना एवं तुलगमा पद्धति।
- बयाना के युद्ध के बाद सांगा ने बाबर को युद्ध तैयारी का पर्याप्त समय दिया।
- सांगा के साथियों द्वारा विश्वासघात (रायसीन का सलहदी तंवर एवं नागौर के खानजादे मुस्लिम) ।
- मुगल सेना ने घोड़ो का प्रयोग किया जबकि राजपूत सेना ने हाथियों का प्रयोग किया।
- मुगल सैनिकों द्वारा हल्के हथियारों का प्रयोग।

खानवा का महत्व
- अफगानों एवं राजपूतों को हराने के बाद बाबर के लिए भारत में राज करना आसान हो गया।
- खानवा अंतिम युद्ध था जिसमे राजस्थान के राजपूतों में एकता देखी गई।
- सांगा अंतिम राजपूत राजा था जिसने दिल्ली को चुनौती देने का प्रयास किया।
- राजपूतों की सामरिक कमजोरियां सामने आई।
- इस युद्ध ने मुगलों की राजपूतों के प्रति भविष्य की नीति का निर्धारण किया (कालांतर में अकबर ने मित्रता की नीति अपनाई)।

- सांगा अंतिम हिन्दू राजा थे जिसके नेतृत्व में सभी राजपूत जातियाँ विदेशियों को भारत से बहार निकलने हेतु एकजुट हुई।
- उन्हें 'अंतिम भारतीय हिन्दू सम्राट/ हिन्दू पत भी कहा जाता है।
- कर्नल टॉड ने उन्हें 'सैनिको का भग्नावशेष' भी कहा है।

राणा सांगा के उत्तराधिकारी

भोजराज
- सांगा का पुत्र।
- मीरा बाई के पति।

रतन सिंह
- सांगा के पुत्र।
- महाराणा सांगा की मृत्यु के बाद मेवाड़ के शासक बने ।
- बूँदी के सूरजमल से लड़ते हुए मृत्यु हो गयी।

महाराणा विक्रमादित्य (1531-36 ईस्वी)
- राणा सांगा के पुत्र ।
- क्यूंकि वह अल्पव्यस्क थे तो उसकी माता एवं राणा सांगा की विधवा रानी कर्मावती उनकी संरक्षिका बनी।
- बाद में बनवीर ने विक्रमादित्य की हत्या कर दी।

चित्तौड़ का युद्ध (1533 -35 ई.) (दूसरा साका)
- 1533 ई में गुजरात के शासक बहादुरशाह ने चितौड़ पर आक्रमण किया लेकिन कर्मावती ने रणथम्भौर का किला देकर संधि कर ली थी।
- सांगा के प्रमुख सरदार - जग्गा एवं बाघ ।
- इस समय विक्रमादित्य का शासन था ।
- चित्तौड़ को बचाने के लिए कर्मावती ने हुमायूँ को राखी भेजी।
- मगर हुमायूँ उसकी सहायता नहीं कर सका जिसकी वजह से कर्मावती ने अन्य स्त्रियों के साथ जौहर (1535 ई) कर लिया और राजपूत योद्धा लड़ते लड़ते मारे गए एवं देवलिया के बाघसिंह के नेतृत्व में केसरिया किया गया।
- इसे 'चितौड़ का दूसरा साका' माना जाता है।

बनवीर (1536-40 ई.)
- सांगा के बड़े भाई पृथ्वीराज की दासी से उत्पन्न पुत्र था।
- उसने चित्तौड़ में नौकोठा महल/ नवलखां महल का निर्माण करवाया।

महाराणा उदयसिंह (1540-1572 ई.)

- बनवीर ने राणा सांगा के पाँचवें पुत्र उदयसिंह को मारने का प्रयत्न किया, परन्तु पन्नाधाय कुछ सरदारों की सहायता से उदयसिंह को कुम्भलगढ़ ले जाने में सफल रही।
- बाद में कोठारिया, केलवा, बागोर आदि ठिकानों के जागीरदारों ने मिलकर उसे राजगद्दी पर बिठा दिया।

- सोनगरे अखैराज की पुत्री जैवन्ती बाई से विवाह होने पर उनके समर्थकों की संख्या बढ़ गई।
- अवसर पाकर उदयसिंह ने बनवीर पर हमला कर दिया
  - ✓ मावली का युद्ध - 1540 ईस्वी
    - बनवीर और उदय सिंह के मध्य
    - उदय सिंह विजयी
- 1540 ई. में उदयसिंह मेवाड़ का वास्तविक शासक बना।
- 1559 ई. - उदयपुर नगर की नींव रखी।
  - ✓ उदयसागर का निर्माण करवाया।

अकबर का चितौड़ पर आक्रमण (1567-68) (तीसरा साका)

- मालवा के बाजबहादुर को शरण दी।
  - ✓ अकबर के लिये चित्तौड़ पर आक्रमण करने के पर्याप्त कारण मौजूद थे।
- अकबर ने मेवाड़ को अपने अधीन करने के लिए 1567 ई. में चित्तौड़ के क़िले पर आक्रमण किया।
- चित्तौड़ के क़िले की सुरक्षा के लिए मेवाड़ की तरफ से जयमल एवं फत्ता ने अकबर से युद्ध किया।

> - अकबर ने जयमल एवं फत्ता की मूर्तियाँ आगरा के किले में लगवाई।
> - बीकानेर के जूनागढ़ में भी जयमल एवं फत्ता की मूर्तियाँ है।

- रानी फूलकंवर के नेतृत्व में 23 फरवरी 1568 को मेवाड़ का तीसरा जौहर हुआ I
- मुग़ल सेना ने 25 फरवरी 1568 ई. में चित्तौड़ के क़िले पर अधिकार कर लिया।
- अकबर ने क़िले पर अधिकार के बाद लगभग 30,000 राजपूतों का कत्ल करवा दिया।

> - महाराणा उदय सिंह ने चितौड़ से अलग हटकर 1559 ई. में उदयपुर नगर की स्थापना की और उसे राजधानी बनाया।
> - साथ ही उन्होंने उदयसागर झील और मोती मगरी के महलों का भी निर्माण करवाया।
> - हाजी हरमाड़ा का युद्ध खां (शेरशाह सूर का सेनापति) और उदयसिंह के मध्य।
> - गोगुन्दा में 28 फरवरी, 1572 ई. को बीमारी से महाराणा उदयसिंह देहांत हो गया।

महाराणा प्रताप (1572-1597 ई.)

प्रताप की राजधानियाँ		
1572	राज्याभिषेक के समय	गोगुन्दा
1572	राज्याभिषेक के बाद	कुम्भलगढ़
1576	हल्दीघाटी युद्ध के समय	कुम्भलगढ़
1576	हल्दीघाटी युद्ध के तत्काल बाद	आवरगढ़ (राजसमन्द)
1577-78	आवरगढ़ के तुरंत बाद	पुन: कुम्भलगढ़
1582	दिवेर युद्ध के पश्चात् (अंतिम राजधानी)	चावंड

- जन्म: 9 मई , 1540 को कुम्भलगढ़ के प्रसिद्ध 'बादल महल' जूनी कचेरी में हुआ।
- माता: जैवन्ती बाई (पाली नरेश अखेराज सोनगरा चौहान की पुत्री)।
- बचपन का नाम: कीका
- राणा उदयसिंह ने मृत्यु से पूर्व अपनी प्रिय भटयाणी रानी के पुत्र जगमाल को अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया।
  - ✓ परन्तु मेवाड़ के सरदारों ने उदयसिंह की मृत्यु के बाद जगमाल को हटाकर 1572 ई. में गोगुन्दा में प्रतापसिंह को मेवाड़ का राणा बना दिया।
- महाराणा प्रताप ने 24 वर्षों तक मेवाड़ पर शासन किया था ।
- अकबर ने जगमाल को शाही सेवा में मनसबदार बना दिया और जहाजपुरा का परगना जागीर के रूप में प्रदान किया।

> सन्धि प्रस्ताव के लिए अकबर द्वारा भेजे गए 4 दूत हैं:(जमाभाटो)
> - जलाल खां - 1572 ईस्वी
> - मान सिंह - 1573 ईस्वी
> - भगवंत दास - 1573 ईस्वी
> - टोडरमल - 1573 ईस्वी

> हल्दी घाटी का युद्ध - 18 जून, 1576
> - यह युद्ध प्रताप व अकबर के मध्य हुआ।
> - छापामार प्रकार का युद्ध था।
> - स्थान - हल्दी घाटी (राजसमन्द)
> - हल्दीघाटी युद्ध में प्रताप के समर्थक
>   - ✓ प्रताप की सेना के कमाण्डर- मुस्लिम सेनापति हकीम खाँ सूरी (हरावल भाग का नेतृत्व), सलूम्बर का चूडावत कृष्णदास, ग्वालियर राजा रामशाह तोमर (तँवर) व उसके तीन पुत्र (शालिवान, भवानी

Toppers Notes Unleash the topper in you